INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

RAJASTHAN POLICE

राजस्थान उपनिरीक्षक

(S.I.)/प्लाटून कमांडर

HANDWRITTEN NOTES

भाग -1 हिंदी + विश्व भूगोल

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

उपनिरीक्षक (S.I) / प्लाटून कमांडर

भाग - I

हिंदी + विश्व भूगोल

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान उपनिरीक्षक (SI / प्लाटून कमांडर)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online order करें ➡ https://cutt.ly/o0zXjbh

Whatsapp करें - ➡ https://wa.link/nr1tcz

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम (2023)**

हिंदी

➢ शब्द रचना

1. सन्धि एवं सन्धि विच्छेद 1

2. समास एवं समास – विग्रह 9

3. उपसर्ग 27

4. प्रत्यय 30

➢ शब्द प्रकार

5. तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज 36

6. संज्ञा 40

7. सर्वनाम 44

8. विशेषण 46

9. क्रिया 49

10. अव्यय 51

➢ शब्द ज्ञान

11. पर्यायवाची शब्द 57

12. विलोम शब्द 62

13. शब्द युग्म का भेद 75

14. वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द 84

15. समश्रुत भिन्नार्थक शब्द / अनेकार्थी शब्द 92

16. शब्द शुद्धि 95

17. व्याकरण कोटियाँ 101

- वृत्ति (mood)
- परसर्ग

18. लिंग 103

19. वचन 105

20. काल 108

21. वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध 111

22. वाक्य-शुद्धि 117

23. विराम-चिह्न 126

24. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ 130

25. प्रशासनिक शब्दावली 143

विश्व भूगोल

1. भौगोलिक संरचना एवं प्रमुख स्थलाकृतियाँ 160

2. प्रमुख नदियाँ एवं झीलें 172

3. जैव विविधता पर्यावरण एवं पारिस्थितिक मुद्दे 179

4. समुद्री जलमार्ग 202

5. प्रमुख औद्योगिक प्रदेश 204

अध्याय – 2

समास एवं समास - विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। ।

जैसे:-

गंगाजल	गंगाजल -	गंगा का जल
गंगा	जल	गंगा जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही

समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में,पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(I) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत, हर आदि शब्द आते हैं।

समस्त पद		विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप में / जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में / (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो। प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे
जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह
मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली

हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे – छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला / वाली
खुला – खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरू – शुरू	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग
अहैतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष /हर वर्ष
छातीभर	-	छाती तक
बार-बार	-	बहुत बार
देखते - देखते	-	देखते ही देखते
एकदम	-	अचानक से
रात-रात	-	पूरी रात भर
सालों-साल	-	बहुत साल
रातों-रात	-	बहुत रात
इरा – इरा	-	बहुत इरा
तरह- तरह	-	बहुत तरह के
भरपूर	-	पूरा भर के
सालभर	-	पूरे साल
घर-घर	-	प्रत्येक घर
नए-नए	-	बिल्कुल नए
घूमता- घूमता	-	बहुत घूमता
बेशक	-	बिना शक के
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
अकारण	-	बिना कारण के
घड़ी-घड़ी	-	हर घड़ी
पहले-पहले	-	सबसे पहले
भरसक	-	पूरी शक्ति से
बखूबी	-	खूबी के साथ
निः सन्देह	-	सन्देह के बिना
बेअसर	-	असर के बिना
सादर	-	आदर के साथ
बेकाम	-	बिना काम के
अनजान	-	बिना जाने
प्रत्यक्ष	-	आँख के सामने
बेफायदा	-	फायदे के बिना
बाकायदा	-	कायदे के अनुसार
बेखटके	-	बिना खटके के
निड़र	-	इर के बिना
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
प्रतिध्वनि	-	ध्वनि की ध्वनि

(2) <u>तत्पुरुष समास Determinative compound</u>

जिस समास मे बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है एवं पूर्व पद गौण होता है तथा दोनों पदो वे बीच

का कारक- चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास छः प्रकार के होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

[I] कर्मतत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में कर्मकारक की विभक्ति 'को' लुप्त हो जाती है, वहाँ कर्मतत्पुरुष समास है। जैसे –

समस्त पद		**विग्रह**
गगनचुम्बी	-	गगन को चूमने वाला
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त
चिड़ीमार	-	चिड़ियों को मारने वाला
ग्रामगत	-	ग्राम को गया हुआ
रथचालक	-	रथ को चलाने वाला
जेबकतरा	-	जेब को काटने वाला
जनप्रिया	-	जन को प्रिय
स्वर्गीय	-	स्वर्ग को गया
वनगमन	-	वन को गमन
सर्वप्रिय	-	सब को प्रिय
गिरहकट	-	गिरह को काटने वाला गिरह / गांठ
अतिथ्यर्पण	-	अतिथि को अर्पण
गृहागत	-	घर को आगत (आया हुआ)
मरणासन्न	-	मरण को पहुंचा हुआ
परलोकगमन	-	परलोक को गमन
स्वर्गगत	-	स्वर्ग को गत (गया हुआ)
शरणागत	-	शरण को आगत
भयप्राप्त	-	भय को प्राप्त
स्वर्ग प्राप्त	-	स्वर्ग को प्राप्त
आशातीत	-	आशा से अतीत
मनपसन्द	-	मन को पसन्द
रूपधारी	-	रूप को धारण करने वाला
वर दिखाई	-	वर को दिखाना
मर्म भेदी	-	दिल को भेदने वाला
कार्यकर्ता	-	कार्य को करने वाला
रात जगा	-	रात को जगा हुआ
कठफोड़वा	-	काठ (लकड़ी)को फोड़ने वाला
देशगत	-	देश को गत (गया हुआ)
पाकिटमार	-	पाकिट को मारने (काटने) वाला
विरोधजनक	-	विरोध को जन्म देने वाला
दिल तोड़	-	दिल को तोड़ने वाला
आपत्तिजनक	-	आपति को जन्म देने वाला
हस्तगत	-	हस्त को गया हुआ
प्राप्तोदक	-	उदक (जल) को प्राप्त तक
तिलकुटा	-	तिल को कूटकर बनाया हुआ
जगसुहाता	-	जग को सुहाने वाला
संकटापन्न	-	संकट को प्राप्त आपन्न
विदेशगमन	-	विदेश को गमन सर्वज्ञ
नरभक्षी	-	नरों को भक्षित करने वाला
स्याहीचूस	-	स्याही को चूसने वाला
कनकटा	-	कान को कटवाने वाला
विद्युत मापी	-	विद्युत को मापने वाला
कृष्णार्पण	-	कृष्ण को अर्पण

[II] <u>करण तत्पुरुष समास (तृतीय तत्पुरुष)</u>:- जिस तत्पुरुष समास मे करणकारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' लुप्त हो जाती है, वहाँ करण तत्पुरुष समास है।

समस्त पद		**विग्रह**
करुणापूर्ण	-	करुणा से पूर्ण
भयाकुल	-	भय से आकुल
रेखांकित	-	रेखा से अंकित
शोकग्रस्त	-	शोक से ग्रस्त
मदान्ध	-	मद से अन्धा
मनचाहा	-	मन से चाहा
पददलित	-	पद से दलित
सूरचित	-	सूर के द्वारा रचित
ईश्वर-प्रदत्त	-	ईश्वर से प्रदत्त
हस्त लिखित	-	हस्त (हाथ) से लिखित
तुलसी कृत	-	तुलसी के द्वारा रचित
दयार्द्र	-	दया से आर्द्र
रत्न जड़ित	-	रत्नों से जड़ित
जन्मरोगी	-	जन्म से रोगी
मनमानी	-	मन से मानी
मुँहमागा	-	मुँह से (द्वारा) माँगा
जन्मांध	-	जन्म से अंधा
वज्रहत	-	वज्र द्वारा हत (मारा हुआ)
प्रशिक्षण	-	विशेष प्रशिक्षण (विशेष द्वारा शिक्षण)
कष्टसाध्य	-	कष्ट से साध्य

आज्ञानुसार	-	आज्ञा के अनुसार
कायदानुसार	-	कायदे के अनुसार
मंत्रिपरिषद	-	मंत्रियों का परिषद्
प्रेमसागर	-	प्रेम का सागर
राजमाता	-	राजा की माता
आमचूर	-	आम का चूर्ण
रामचरित	-	राम का चरित

[VI] <u>अधिकरण तत्पुरुष समास (सप्तमी तत्पुरुष)</u> :- जिस तत्पुरुष समास में अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है, अधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

जैसे :-

समस्त पद		**विग्रह**
शोकमग्न	-	शोक में मग्न
पुरुषोत्तम	-	पुरुषों में उत्तम
आपबीती	-	आप पर बीती
गृहप्रवेश	-	गृह में प्रवेश
लोकप्रिय	-	लोक में प्रिय
धर्मवीर	-	धर्म में वीर
कलाश्रेष्ठ	-	कला में श्रेष्ठ
आनंदमग्न	-	आनंद में मग्न
कर्मनिरत	-	कर्म में निरत
क्षत्रियाधम	-	क्षत्रियों में अधम
दानवीर	-	दान में वीर
नरोत्तम	-	नरों में उत्तम
वनवास	-	वन में वास
ग्रामवास	-	ग्राम में वास
स्नेहमग्न	-	स्नेह में मग्न
युद्धवीर	-	युद्ध में वीर
ध्यानमग्न	-	ध्यान में मग्न
घुड़सवार	-	घोड़े पर सवार
कुलश्रेष्ठ	-	कुल में श्रेष्ठ
शरणागत	-	शरण में आगत (आगत = आया हुआ)
कानाफूसी	-	कान में फुसफुसाहट
जलमग्न	-	जल में मग्न
कार्यकुशल	-	कार्य में कुशल
सिरदर्द	-	सिर में दर्द
दही बड़ा	-	दही में डूबा हुआ बड़ा
देशाटन	-	देश में अटन (भ्रमण)
नीति-निपुण	-	नीति में निपुण
हथकड़ी	-	हाथ में पहनने वाली कड़ी
घर बैठे	-	घर में बैठे
वनमानुष	-	वन में निवास करने वाले मानुष
जीवदया	-	जीवों पर दया
घृतान्न	-	घी में पका हुआ अन्न
कविपुंगल	-	कवियों में श्रेष्ठ

<u>नोट :-</u>

तत्पुरुष समास के उपयुक्त प्रकार के अलावा पाँच अन्य प्रकार भी होते हैं, जो नीचे दिए गए हैं।

I) <u>नञ तत्पुरुष समास :-</u>

जिस समास के पूर्व पद में निषेधसूचक अथवा नकारात्मक शब्द अ , अन् , न , ना , गैर आदि लगे हों, उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं।

<u>जैसे :-</u>

समस्त पद		**विग्रह**
अनादर	-	न आदर
अनहोनी	-	न होनी / नहीं जो होनी चाहिए
अन्याय	-	न्याय का ना होना
अनागत	-	न आगत
अधर्म	-	धर्म हीन / नहीं जो धर्म
अनादि	-	आदि रहित
अस्थिर	-	न स्थिर
अज्ञान	-	न ज्ञान
अनिच्छा	-	न इच्छा
अपूर्ण	-	न पूर्ण
अनर्थ	-	अर्थ हीन / नहीं हो जो अर्थ के / बिना अर्थ के
अनश्वर	-	न नश्वर
नीरस	-	न रस
अब्राह्मण	-	न ब्राह्मण
अनुपस्थित	-	न उपस्थित
अज्ञात	-	न ज्ञात

असत्य	-	न सत्य
अनदेखी	-	न देखी
नास्तिक	-	न आस्तिक
अयोग्य	-	न योग्य
असुंदर	-	न सुंदर
अनाथ	-	बिना नाथ के
असंभव	-	न संभव / नहीं हो जो संभव
अनावश्यक	-	न आवश्यक / नहीं हो जो आवश्यक
ना पसंद	-	न पसंद
नावाजिब	-	न वाजिब

[3] <u>कर्मधारय समास (Appositional Compound):-</u>

जिस समास पद का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद तथा उत्तर पद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्यसंबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है।

आसानी से समझने के लिए कर्मधारय समास को दो प्रकारों में बांटा गया है।

इस प्रकार में पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद संज्ञा या सर्वनाम अर्थात विशेष्य होता है।

<u>पहचान:-</u> कर्मधारय समास के विग्रह में "जो" शब्द आता है ।

समस्त पद		**विग्रह**
महाकवि	-	महान है जो कवि (व्याख्या :- यहां महान विशेषण तथा कवि विशेष्य है)
महापुरुष	-	महान है जो पुरुष
महौषध	-	महान है जो औषध
पीतसागर	-	पीत (पीला) है जो सागर
नीलकमल	-	नील (नीला) हैजो कमल
नीलांबर	-	नीला है जो अंबर
नीलोत्पल	-	नील (नीला) है जो उत्पल (कमल)
लालमणि	-	लाल है जो मणि
नीलकंठ	-	नीला है जो कंठ
महादेव	-	महान है जो देव
अधमरा	-	आधा है जो मरा
परमानंद	-	परम है जो आनंद
सुकर्म	-	सुंदर है जो कर्म
सज्जन	-	सच्चा है जो जन
लालटोपी	-	लाल है जो टोपी
महाविद्यालय	-	महान है जो विद्यालय
कृष्णसर्प	-	काला है जो सर्प (सांप)
शुभगमन	-	शुभ है जो आगमन
महावीर	-	महान है जो वीर
काली मिर्च	-	काली है जो मिर्च
महेश	-	महान है जो ईश
महायुद्ध	-	महान है जो युद्ध

<u>नोट :-</u> कुछ कर्मधारय समास के उदाहरणों में पहला पद विशेष्य (संज्ञा या सर्वनाम) तथा उत्तर पद विशेषण होता है। इनके विग्रह में भी "जो" शब्द आता है ।

<u>जैसे:-</u>

समस्त पद	-	**विग्रह**
पुरुषोत्तम	-	पुरुषों में जो है उत्तम
घनश्याम	-	घन (बादल) है जो शाम (काला)

नराधम (नर+अधम) - नारे (व्यक्ति) है जो अधम (नीच)

जब एक पद उपमान (जिससे तुलना की जा रही है) तथा दूसरा पद उपमेय (जिसकी तुलना की जा रही है),वहां भी कर्मधारय समास होता है ।

<u>पहचान:-</u> कर्मधारय समास के विग्रह में 'के समान', 'रूपी' अथवा 'जैसा' शब्द आते हैं।

समस्त पद		विग्रह
विद्याधन	-	विद्यारूपी धन (विद्या के समान धन)
राजीवनयन (राजीव+ नयन)	-	राजीव अर्थात् कमल जैसे नयन
कमलाक्षी (कमल + अक्षी)	-	कमल जैसी आंखों वाली
कंबू ग्रीवा (कंबू + ग्रीवा)	-	कबूतर जैसी गर्दन वाली
कर कमल (कर + कमल)	-	कमल के समान कर (हाथ)
मुख चंद्र(मुख + चंद्र)	-	चंद्र सा मुख (चंद्र के समान मुख)
देहलता (देह + लता)	-	लता जैसी देह (शरीर)
वचनामृत (वचन + अमृत)	-	अमृत तुल्य वचन (अमृत के समान वचन)
कन्यारत्न (कन्या + रत्न)	-	रत्न जैसी कन्या
मृगनयनी (मृग + नयनी)	-	मृग जैसे नयन
चंद्रमुखी (चन्द्र + मुखी)	-	चंद्र के समान मुख
शूरवीर (शूर + वीर)	-	शूर के समान वीर
कुसुमकपोल (कुसुम + कपोल)	-	कुसुम (फूल) के समान कपोल (गाल)
स्त्रीरत्न (स्त्री + रत्न)	-	स्त्री रूपी रत्न
क्रोधाग्नि (क्रोध + अग्नि)	-	क्रोध रूपी अग्नि
नृसिंह (नृ + सिंह)	-	सिंह रूपी नर
ग्रंथरत्न (ग्रंथ + रत्न)	-	ग्रंथ रूपी रत्न
कमल नयन (कमल + नयन)	-	कमल के समान नयन
चरण कमल (चरण + कमल)	-	कमल के समान चरण
नयनबाण (नयन + बाण)	-	नयन रूपी बाण
प्राण प्रिय (प्राण + प्रिय)	-	प्राणों के समान प्रिय

मध्यलोपी कर्मधारय समासः-

पूर्वपद तथा उत्तर पद में सम्बन्ध बताने वाले पद का लोप हो जाता है।

समस्त पद		विग्रह
पनचक्की	-	पानी से चलने वाली चक्की
रेलगाड़ी	-	रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
दहीबड़ा	-	दही में डूबा हुआ बड़ा
वनमानुष	-	वन मे निवास करने वाला मानुष
गुरुभाई	-	गुरु के सम्बन्ध मे भाई
मधुमक्खी	-	मधु का संचय करने वाली मक्खी
मालगाड़ी	-	माल ले जाने वाली गाडी
बैलगाड़ी	-	बैलों से खींची जाने वाली गाडी
पर्ण शाला	-	पर्णों से बनी शाला
मृत्युदंड़	-	मृत्यु के लिए दिए जाने वाला दंड़
पर्णकुटी	-	पर्णों से बनी कुटी
धृतअन्न	-	धृत से युक्त अन्न

कर्मधारय समास के अन्य उदाहरणः-

समस्त पद		विग्रह
रक्तलोचन	-	रक्त (लाल) है जो लोचन (आँख)
महासागर	-	महान है जो सागर
चरमसीमा	-	चरम तक पहुँची है जो सीमा
कुमारगंधर्व	-	कुमार है जो गन्धर्व
प्रभुदयाल	-	दयालु है जो प्रभु
परमाण	-	परम है जो अण
हताश	-	हत है जिसकी आशा

तिमंजिल	-	तीन मंजिलों का समूह
तितल्ले	-	तीनों तल्लों का समूह
पंचतंत्र	-	पाँच तन्त्रों का समूह
त्रिवेणी	-	तीनों वेणियों का समूह
चतुष्पद	-	चार पादों का समूह
नवग्रह	-	नौ ग्रहों का समूह
चतुर्दिक	-	चार दिशाओ का समूह
त्रिफला	-	तीन फलों का समूह
त्रिभुवन	-	तीन भवनों का समूह

नोट- प्रायः द्विगु समास के समस्त पद एकवचन की तरह प्रयोग में लाये जाते हैं। जैसे:-

1. षट् रस का आनन्द लेना (शुद्ध) - षट् रसों का आनन्द लेना (अशुद्ध)
2. मैंने पंचतन्त्र (ग्रन्थ) पढा (शुद्ध) - मैंने पंचतन्त्र पढे। (अशुद्ध)
3. शताब्दी (न कि सौ वर्ष)
4. त्रिकोण (तीन कोण वाला एक आकार, न कि तीन कोण)
5. शतदल (सौ या अधिक दलों वाला कमल पुष्प, न कि सौ दल)

आदि शब्द एकवचन संज्ञा के रूप में प्रयोग में आते हैं।

कर्मधारय समास और द्विगु समास में अन्तरः-

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है, जो दूसरे पद की गिनती बताता है, जबकि, कर्मधारय समास का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नही होता हैं। जैसे:- नवरत्न - नौ रत्नों का समूह (द्विगु समास)

चतुर्वर्ण- चार वर्णों का समूह (द्विगु समास)

पुरुषोत्तम- पुरुषों में जो है उत्तम (कर्मधारय समास)

रक्तोत्पल - रक्त (लाल) है जो उत्पल (कमल) (कर्मधारय समास)

(5) द्वन्द्व (द्वन्द) समास (Copulative Compound):-

जिस समास में दोनों पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर 'और',अथवा , 'या', 'एवं' लगता हो, वहाँ द्वन्द्व समास होते हैं ।

पहचान- दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिन्ह (Hyphen) (-) का प्रयोग होता हैं। इस समास में एक जैसे दो शब्द आएँगे जैसे:- संज्ञा - संज्ञा, क्रिया -क्रिया, विशेषण - विशेषण आदि।

समस्त पद		**विग्रह**
नदी - नाले	-	नदी और नाले
पाप- पुण्य	-	पाप और पुण्य
सुख - दुःख	-	सुख और दुःख
गुण-दोष	-	गुण और दोष
देश - विदेश	-	देश और विदेश
आगे - पीछे	-	आगे और पीछे
राजा - प्रजा	-	राजा और प्रजा
नर - नारी	-	नर और नारी
राधा - कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
छल - कपट	-	छल और कपट
अपना - पराया	-	अपना और पराया
गंगा- यमुना	-	गंगा और यमुना
कपड़ा -लत्ता	-	कपड़ा और लत्ता
वेद- पुराण	-	वेद और पुराण
गाड़ी - घोड़ा	-	गाड़ी और घोड़ा
खरा - खोटा	-	खरा और खोटा
गौरी - शंकर	-	गौरी और शंकर
अन्न-जल	-	अन्न और जल
ऊंच - नीच	-	ऊंच और नीच
माता - पिता	-	माता और पिता
यश - अपयश	-	यश और अपयश
ठण्डा - गरम	-	ठंडा और गरम
हिन्दु मुसलमान	-	हिन्दु और मुसलमान
भला - बुरा	-	भला या बुरा
तेरी - मेरी	-	तेरी और मेरी
दो - चार	-	दो या चार
इधर - उधर	-	इधर और उधर
ऊपर - नीचे	-	ऊपर या नीचे
उठता - गिरता	-	उठता और गिरता

घर – द्वार	-	घर और द्वार
बन – ठन	-	बन और ठन
देश – विदेश	-	देश और विदेश
नाचना-गाना	-	नाचना और गाना
देवासुर	-	देव और असुर
दरवाजे खिड़कियाँ	-	दरवाजे और खिड़कियाँ
धर्माधिर्म	-	धर्म और अधर्म
ऋषियों मुनियों	-	ऋषियों और मुनियों
राधा-कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
लड़ाई – झगड़ा	-	लड़ाई और झगड़ा
भाई – बहन	-	भाई और बहन
हीरा – मोती	-	हीरा और मोती
रात - दिन	-	रात और दिन
एक – दूसरे	-	एक या दूसरे
सीता – राम	-	सीता और राम
दोपहर –संध्या	-	दोपहर या संध्या
लव- कुश	-	लव और कुश
खली – भूसा	-	खली और भूसा
धनी - मानी	-	धनी और मानी
अच्छा – बुरा	-	अच्छा या बुरा
खट्टा - मीठा	-	खट्टा और मीठा
दाएँ –बाएँ	-	दाएँ या बाएँ
दाल – रोटी	-	दाल और रोटी
दानें – चारें	-	दानें और चारें
धूप – दीप	-	धूप और दीप
मारपीट	-	मार और पीट
राधे – श्याम	-	राधे और श्याम
उछलने – कूदने	-	उछलने और कूदने
नर – नारी	-	नर और नारी
आरजू – विनती	-	आरजू या विनती
लोटा – डोरी	-	लोटा और डोरी
मरना – जीना	-	मरना और जीना
आटा – दाल	-	आटा और दाल
गिरते – पड़ते	-	गिरते और पड़ते
ऊँच – नीच	-	ऊंच और नीच
आज - कल	-	आज या कल
हानि – लाभ	-	हानि और लाभ
सोडा – नमक	-	सोडा और नामक
छोटा – बड़ा	-	छोटा और बड़ा
जान – पहचान	-	जान और पहचान
राम-लक्ष्मण	-	राम और लक्ष्मण
सोलह – सत्रह	-	सोलह या सत्रह
दाल – भात	-	दाल और भात
रंग – बिरंगे	-	रंग और बिरंगे
घी –शक्कर	-	घी और शक्कर
चाय – सत्तू	-	चाय और सत्तू
जीवन – मरण	-	जीवन और मरण
छोटे – बड़े	-	छोटे और बड़े
हाथ – पाँव	-	हाथ और पाँव
साबुन – तेल	-	साबुन और तेल
सुख – सुविधाओं	-	सुख और सुविधाओं
रहन-सहन	-	रहन और सहन
रोक - टोक	-	रोक या टोक
इच्छा –आकांक्षा	-	इच्छा और आकांक्षा
हंसती – खेलती	-	हंसती और खेलती
पसंद – नापसन्द	-	पसन्द या ना पसन्द
जाने – माने	-	जाने और माने
सवाल –जवाब	-	सवाल और जवाब
पूजा – पाठ	-	पूजा और पाठ
पढ़े – लिखे	-	पढ़े और लिखे
प्रचार – प्रसार	-	प्रचार और प्रसार
पैसा – धेला	-	पैसा और धेला
समय- असमय	-	समय या असमय

चेहरे – मोहरे - चेहरे और मोहरे
स्थान – अस्थान - स्थान या अस्थान
रंग – ढंग - रंग और ढंग
फूल – पत्ते - फूल और पत्ते
गांधी – नेहरू - गाँधी और नेहरू
बाल - बच्चों - बाल और बच्चों
आन –बान– शान - आन और बान और शान
पति – पत्नी - पति और पत्नी
दादी – दादा - दादी और दादा
नाच –गान - नाच और गान
लड़ते – भिड़ते - लड़ते और भिड़ते
कूदते - फाँदते - कूदते और फाँदते
झुण्ड–मुण्ड - झुण्ड और मुण्ड
सभा–सोसाइटियों - सभा और सोसाइटियों
विशेषज्ञ–व्याख्याता - विशेषज्ञ और व्याख्याता
एकाध - एक या आधा
हिन्दी बांग्ला - हिन्दी और बांग्ला
इर्द – गिर्द - इर्द या गिर्द
साँप – बिच्छु - सांप और बिच्छु

ताक – झांक - ताक और झाँक
हाव – भाव - हाव और भाव
चूल्हे – चौके - चूल्हे और चौके
भूखे – प्यासे - भूखे और प्यासे
साल-दो साल - एक साल या दो साल
नर – नारियों - नर और नारियों
गोबरी – लिपाई - गोबरी और लिपाई
सभा– सम्मेलन - सभा और सम्मेलन
जमीन – जायदादों - जमीन और जायदादों
खरीद –बिक्री - खरीद और बिक्री
तर्क-वितर्क - तर्क या वितर्क
पत्र – पत्रिकाएँ - पत्र और पत्रिकाएँ
सीधे – सादे - सीधे या सादे
सजे - धजे - सजे और धजे
रुप – प्रकार - रूप और प्रकार
चीख – पुकार - चीख और पुकार
लाभा-लाभ - लाभ और अलाभ (हानि)
रीति – रिवाज - रीति और रिवाज
रामकृष्ण - राम और कृष्ण

समस्त पद	गौण पद+गौण पद	विग्रह(सामान्य अर्थ)	सामान्य पद (इंगित अर्थ)
नीलकंठ	नील + कंठं	नीला कंठ है जिसका	शिवजी, एक पक्षी
गजानन	गज + आनन (मुख)	गज के समान है आनन जिसका	श्री गणेश जी
गिरिधर	गिरि + धर	गिरि की धारण करने वाला	श्री कृष्ण
चतुरानन	चतुर + आनन (मुख)	चार मुख वाला	ब्रह्मा जी
चक्रधर	चक्र + धर	जिसके हाथ मे चक्र हो	श्री कृष्ण
घनश्याम	घन + श्याम	काले बादल जैसा	श्री कृष्ण

अध्याय – 6

संज्ञा

संज्ञा (Noun) की परिभाषाः-

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं

दूसरे शब्दों में- किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जैसे – प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि ।

वस्तुओं के नाम- अनार ,रेडियों , किताब, संदूक, आदि ।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार , नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता , बुढ़ापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु ' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं ,वरन उनके धर्मों का भी सूचक है।

साधारण अर्थ में 'वस्तु ' का प्रयोग इस अर्थ में नही होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं-

(1)व्यक्तिवाचक (Proper noun)

(2)जातिवाचक (Common noun)

(3)भाववाचक (Abstract noun)

(4)समूहवाचक (Collective noun)

(5)द्रव्यवाचक (Material noun

(1)व्यक्तिवाचक संज्ञा :-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

जैसे-

व्यक्ति का नाम-रवीना , सोनियां गाँधी , श्याम, हरि, सुरेश , सचिन आदि ।

वस्तु का नाम- कर , टाटा चाय, कुरान , गीता ,रामायण आदि ।

स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार , जयपुर आदि ।

दिशाओं के नाम- उत्तर , पश्चिम , दक्षिण , पूर्व ।

देशों के नाम- भारत , जापान , अमेरिका, पाकिस्तान , बर्मा ।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय , रूसी, अमेरिकी।

समुन्द्रों के नाम- काला सागर , भूमध्य सागर , हिन्द महासागर , प्रशान्त महासागर।

नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा कावेरी , सिन्धु ।

पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनंदा, कराकोरम ।

नगरों चोको और सड़कों के नाम वाराणसी , गया,चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग ।

पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद , धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त ।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर –क्रांति ।

दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर ,जुलाई, सोमवार , मंगलवार ।

त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) **जातिवाचक संज्ञा** :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा , जानवर , नदी, अध्यापक, बाजार , गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे - लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु , नदी , मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता है।

(3) भाववाचक संज्ञाः-

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी , आजादी , हँसी , चढ़ाई, साहस,

वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहे हैं।

इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ' हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनानाः-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
स्त्री-	स्त्रीत्व	भाई-	भाईचारा

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य	मनुष्यता	पुरुष	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र	शास्त्रीयता	जाति	जातीयता
पशु	पशुता	बच्चा	बचपन
दनुज	दनुजता	नारी	नारीत्व
पात्र	पात्रता-	बूढा	बुढ़ापा
लड़का	लड़कपन	मित्र	मित्रता
दास	दासत्व	पण्डित	पण्डिताई
अध्यापक	अध्यापन	सेवक	सेवा

(2) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
लघु-	लघुता, लघुत्व, लाघव	वीर-	वीरता, वीरत्व
एक-	एकता, एकत्व	चालाक-	चालाकी
ख़ट्टा-	खटाई	गरीब	गरीबी
गंवार	गंवारपन	पागल	पागलपन
बूढा	बुढ़ापा	मोटा	मोटापा
नबाव	नबावी	दीन	दीनता,दैन्य

बड़ा	बड़ाई	सुंदर	सौंदर्य, सुंदरता
भला	भलाई	बुरा	बुराई
ढीठ	ढिठाई	चौंड़ा	चौंड़ाई
लाल	सरलता सारल्य	आवश्यकता	आवश्यकता
परिश्रमी	परिश्रम	अच्छा	अच्छाई
गंभीर	गंभीरता, गांभीर्य	सभ्य	सभ्यता
स्पष्ट	स्पष्टता	भावुक	भावुक
अधिक	अधिकता, आधिक्य	अधिक	अधिकता
सर्द	सर्दी	कठोर	कठोरता
मीठा	मिठास	चतुर	चतुराई
सफेद	सफेदी	श्रेष्ठ	श्रेष्ठता
मूर्ख	मूर्खता	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता
खोजना	खोज	सीना	सिलाई
जीतना	जीत	रोना	रुलाई
लड़ना	लड़ाई	पढ़ना	पढ़ाई
चलना	चाल, चलन	पीटना	पिटाई
देखना	दिखावा, दिखावट	समझना	समझ
सींचना	सिंचाई	पड़ना	पड़ाव
पहनना	पहनावा	चमकना	चमक
लूटना	लूट	जोड़ना	जोड़
घटना	घटाव	नाचना	नाच
बोलना	बोल	पूजना	पूजन
झूलना	झूला	जोतना	जुताई
कमाना	कमाई	बचना	बचाव
रुकना	रुकावट	बनना	बनावट
मिलना	मिलावट	बुलाना	बुलावा
भूलना	भूल	छापना	छापा, छपाई

बैठना	बैठक, बैठकी	बढ़ना	बाढ़
घेरना	घेरा	छीकंना	छीकं
फिसलना	फिसलन	खपना	खपत
रँगना	रंगाई, रंगत	मुसकारना	मुसकान
उड़ना	उड़ान	घबराना	घबराहट
मुड़ना	मोड़	सजाना	सजावट
चढ़ना	चढाई	बहना	बहाव
मारना	मार	दौंड़ना	दौंड़
गिरना	गिरावट	कूदना	कूद
अंत	अंतिम, अंत्य	अर्थ	आर्थिक
अवश्य	आवश्यक	अंश	आंशिक
अभिमान	अभिमानी	अनुभव	अनुभवी
इच्छा	ऐच्छिक	इतिहास	ऐतिहासिक
ईश्वर	ईश्वरीय	उपज	उपजाऊ
उन्नति	उन्नत	कृपा	कृपालु
कुल	कुलीन	केंद्र	केंद्रीय
क्रम	क्रमिक	कागज	कागजी
किताब	किताबी	काँटा	कँटीला
कंकड़	कंकड़ीला	कमाई	कमाऊ
क्रोध	क्रोधी	आवास	आवासीय
आसमान	आसमानी	आयु	आयुष्मान
आदि	आदिम	अज्ञान	अज्ञानी
अपराध	अपराधी	चाचा	चचेरा
जवाब	जवाबी	जहर	जहरीला
जाति	जातीय	जंगल	जंगली
झगड़ा	झगड़ालू	तालु	तालव्य
तेल	तेलहा	देश	देशी
दान	दानी	दिन	दैनिक

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अपना	अपनापन /अपनाव	मम	ममता , ममत्व
निज	निजत्व, निजता	पराया	परायापन
स्व	स्वत्व	सर्व	सर्वस्व
अहं	अहंकार	आप	आपा

3. क्रिया विशेषण से भाववाचक संज्ञाः-

मन्द- मन्दी;

दूर- दूरी;

तीव्र- तीव्रता;

शीघ्र- शीघ्रता इत्यादि।

4. अव्यय से भाववाचक संज्ञाः-

परस्पर-पारस्पर्य ;

समीप- सामीप्य;

निकट- नैकट्य;

शाबाश- शाबाशी;

वाहवाह- वाहवाही

धिक् - धिक्कार

शीघ्र- शीघ्रता

(4) समूहवाचक संज्ञा :- जिस संज्ञा शब्द से वस्तुओं के समूह या समुदाय का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- व्यक्तियों का समूह- भीड़, जनता, सभा, कक्षा; वस्तुओंका समूह- गुच्छा, कुंज, मण्डल, घौंद।

(5) द्रव्यवाचक संज्ञा :-जिस संज्ञा से नाप-तौलवाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- जिन संज्ञा शब्दों से किसी धातु, द्रव या पदार्थ का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- तांबा, पीतल, चावल, घी, तेल, सोना, लोहा आदि।

संज्ञाओं का प्रयोग

संज्ञाओं के प्रयोग में कभी-कभी उलटफेर भी हो जाया करता है। कुछ उदाहारण यहाँ दिये जा रहे है-

(क) जातिवाचक : व्यक्तिवाचक- कभी- कभी जातिवाचक संज्ञाओं का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में होता है। जैसे- 'पुरी' से जगन्नाथपुरी का 'देवी' से दुर्गा का, 'दाऊ' से कृष्ण के भाई बलदेव का, 'संवत्' से विक्रमी संवत् का, 'भारतेन्दु' से बाबा हरिश्चंद्र का और 'गोस्वामी' से तुलसीदासजी का बोध होता है। इसी तरह बहुत- सी योगरूढ़ संज्ञाएँ मूल रूप से जातिवाचक होते हुए भी प्रयोग में व्यक्तिवाचक के अर्थ में चली आती हैं। जैसे- गणेश, हनुमान, हिमालय, गोपाल इत्यादि।

(ख) व्यक्तिवाचक : जातिवाचक- कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक (अनेक व्यक्तियों के अर्थ) में होता है। ऐसा किसी व्यक्ति का असाधारण गुण धर्म दिखाने के लिए किया जाता है। ऐसी अवस्था में व्यक्तिवाचक संज्ञा जातिवाचक संज्ञा में बदल जाती है। जैसे- गाँधी अपने समय के कृष्ण थे; यशोदा हमारे घर की लक्ष्मी हैं; तुम कलियुग के भीम हो इत्यादि।

(ग) भाववाचक : जातिवाचक- कभी-कभी भाववाचक संज्ञा का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में होता है। उदाहरण - ये सब कैसे अच्छे पहरावे हैं? यहाँ 'पहरावा' भाववाचक संज्ञा है, किन्तु प्रयोग जातिवाचक संज्ञा में हुआ। 'पहरावे' से 'पहनने के वस्त्र' का बोध होता है। संज्ञा के रूपान्तर (लिंग, वचन और कारक में सम्बन्ध) संज्ञा विकारी शब्द है। विकार शब्द रूपों को परिवर्तित अथवा रूपान्तरित करता है। संज्ञा के रूप लिंग, वचन और कारक चिन्हों (परसर्ग) के कारण बदलते हैं।

लिंग के अनुसार

नर खाता है- नारी खाती है।

लड़का खाता है- लड़की खाती है।

इन वाक्यों में 'नर' पुर्लिंग है और 'नारी' स्त्रीलिंग। 'लड़का' पुर्लिंग है और 'लड़की' स्त्रीलिंग। इस प्रकार, लिंग के आधार पर संज्ञाओं का रूपान्तर होता है।

वचन के अनुसार

लड़का खाता है- लड़के खाते हैं।

लड़की खाती लड़कियाँ हैं - खाती हैं।

एक लड़का जा रहा है- तीन लड़के जा रहे हैं।

अध्याय – II

पर्यायवाची शब्द

इसे प्रतिशब्द भी कहते हैं । जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं । हिन्दी में तत्सम पर्यायवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं । हिन्दी में तद्भव पर्यायवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं -

(अ)

शब्द		**पर्याय**
अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	-	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड़ ।
अग्नि	-	आग, पावक, अनल, वहिन, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर ।
अनी	-	सेना, फौज, चमू, कटक, दल।
असुर	-	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर ।
अरण्य	-	जंगल, वन, कानन, विपिन ।
अश्व	-	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग ।
अंकुर	-	अँखुआ, कोंपल,कल्ला,नवोद्भिद्/
अंचल	-	पल्ला, पल्लू, आँचल ।
अंत	-	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार
अंत	-	फल, अंजाम. परिणाम. नतीजा ।
शब्द	-	**पर्याय**
अचल	-	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर ।
अचला	-	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	-	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना ।
अधर	-	ओंठ, ओष्ठ, लब, रद-पट, होंठ ।
अनंग	-	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ ।
अनल	-	'अग्नि' ।
अनाज	-	अन्न, धान्य, शस्य ।
अनिल	-	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत् ।
अनुकम्पा	-	कृपा, मेहरबानी, दया ।
अन्वेषण	-	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच ।
अपना	-	निज, निजी, व्यक्तिगत ।
अपर्णा	-	पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी
अपमान	-	तिरस्कार, अनादर, निरादर ।
अप्सरा	-	देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या ।
अबला	-	नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री
अभय	-	निर्भय, निर्भीक, निड़र, साहसी ।
अभिप्राय	-	तात्पर्य, आशय, मंतव्य ।

(आ)

आँख	-	नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग ।
आम	-	आम्र, रसाल, चूत, सहकार, अमृतफल ।
आग	-	अग्नि' ।
आकाश	-	व्योम, गगन, अम्बर, नभ, आसमान, अनन्ता ।
आनन्द	-	मोद, प्रमोद, आमोद, हर्ष, आह्लाद, उल्लास ।
आकांक्षा	-	अभिलाषा' ।
आँधी	-	तूफान, अंधड़, बवंड़र ।
आर्त	-	दुखी, उद्वितन, खिन्न, क्षुब्ध, कातर, संतप्त, पीड़ित ।
आर्यावर्त्त	-	भारत, हिन्द, हिन्दुस्तान, इंडिया ।
आस्था	-	आदर, महत्व, मानं, कद्र ।
आहार	-	भोजन, खुराक, खाना ।

इ-ई

इंदिरा	-	कमला, रमा, लक्ष्मी, श्री, विष्णुप्रिया ।

इंदीवर - पंकज, जलज, नीरज, कमल, राजीव, उत्पल ।
इंदु - चाँद, राकेश, चन्द्रमा, सुधाकर, चन्द्र, निशाकर, हिमांशु, सुधांशु, राकापति, विधु,शशि,तारापति, मृगांक ।
इच्छा - अभिलाषा' ।
इन्द्रदेवराज - सुरपति, महेन्द्र, मेघराज, पुरन्दर, मघवा, शचीपति, विष्णु ।
इन्द्राणी - शची, पुलोमजा, इन्द्रवधू, इन्द्रप्रिया
इत्यादि - आदि, वगैरह, प्रभृति ।
ईर्ष्या - डाह, जलन, मत्सर, कुढ़न ।
ईश - ईश्वर, प्रभु, परमात्मा, भगवान्, परमपिता, परमेश्वर ।
ईश्वर - ईश'।
ईहा - इच्छा, आकांक्षा, एषणा, ईप्सा, चाह, कामना, स्पृहा, वांछा ।

उ – ऊ

उजाला - प्रकाश, ज्योति, प्रभा, आभा, रोशनी ।
उत्पल - 'इन्दीवर' ।
उत्पत्ति - जन्म, पैदाइश, उद्भव ।
उत्सव - पर्व, आयोजन, समारोह, त्यौहार ।
उत्साह - हौसला, उमंग, जोश ।
उदधि - सागर, समुद्र, सिन्धु, जलधि, पयोधि, नदीश ।

शब्द **पर्याय**

उद्यान - उपवन, बाग, बगीचा ।
ऊँचा - उच्च, उत्तुंग, शीर्षस्थ, उन्नत ।
ऋषि - मनीषी, मुनि, साधु, महात्मा ।
एषणा - 'इच्छा'।
ऐश्वर्य - वैभव, संपन्नता, समृद्धि ।
ओंठ - अधर' ।
औरत - स्त्री, वामा, महिला, वनिता, रमणी, अंगना ।
कमल - पद्म, अरविन्द, सरोज, जलज, कंज, सरसिज, उत्पल, वारिज, नलिन ।
कामदेव - अनंग' ।
किरण - अंशु, कट, रश्मि, मयूख, मरीचि ।
कुबेर - धनद, धनाधिप, यक्षराज, किन्नरेश
कच - कमल' ।
कंचन - स्वर्ण, कनक, हेम, सोना, हिरण्य ।
कच - कुंतल, बाल, अलक, गेसू, केश ।
कनक - कंचन' ।
कपड़ा - पट, वस्त्र, वसन, अम्बर ।
कपाल - भाल, शीश, मस्तक, सिर ।
कमला - 'इन्दिरा' ।
कलाधर - इन्दु' ।
कवि - रचनाकार, रचयिता, शायर ।
कामना - ईहा' ।
काया - देह, शरीर, गात्र, गात, तन ।
काला - श्याम, कृष्ण, असित, श्यामल ।
किताब - पुस्तक, ग्रन्थ, पोथी ।
किनारा - पुलिन, तट, कूल, तीर, कगार ।
कुच - स्तन, उरोज, उरसिज, चूचुक ।
कुलटा - व्यभिचारिणी, पुंश्चली, स्वैरिणी, छिनाल ।
कुसुम - फूल, पुष्प, सुमन, प्रसून ।
कृष्ण - गोपाल, गोविन्द, माधव, मुरलीधर, मोहन, मुरारि, मधुसूदन, श्याम ।
कोकिल - कोकिला, पिक, श्यामा, कोयल ।
कोप - क्रोध, अमर्ष, रोष ।
कोयल - 'कोकिल' ।

शब्द **पर्याय**

कोष - खजाना, निधि, भंडार ।
क्रोध - कोप, रोष, प्रकोप, अमर्ष ।
क्षपा - रात्रि, रात, निशा, यामिनी, रजनी, विभावरी ।
क्षिति - पृथ्वी, मही, धरा, धरणी, धरती, भू, भूमि ।

क्षीर - दूध, पय, गोरस ।

(ख)

खंजन - सारंग, नीलकंठ, कलकंठ, खड़रिच

खग - पक्षी, पंछी, चिड़िया, विहंग, नभचर

खोज - अन्वेषण, शोध, आविष्कार, अनुसंधान ।

ख्याति - प्रसिद्धि, यश, नाम ।

(ग)

गंगा - भागीरथी, देवनदी, जाह्नवी, सुरसरिता, अलकनन्दा, देवापगा ।

गगन - आकाश' ।

गज - हाथी, नाग, कुञ्जर, मातंग, द्विप, हस्ती, करी।

गणेश - गजानन, गणपति, लंबोदर, विनायक, गजवदन, गणाधिप ।

गदहा - खर, गर्दभ, वैशाखनन्दन, धूसर, रासभ ।

गेह - घर, निकेतन, भवन, सदन, आलय, गृह, घाम, मन्दिर ।

गरुड़ - पक्षिराज, विष्णुवाहन, भुजंगभोजी, पन्नगारि ।

गाँव - ग्राम, देहात, मौंजा, बस्ती ।

गाय - गौ, धेनु, सुरभि, कल्याणी ।

गोधूलि- - सन्ध्या, सायं, शाम, दिवसावसान, दिनांत ।

(घ)

घड़ा - घट, कलश, गगरा, कलसा ।

घन - बादल, वारिद, मेघ, वारिधर, जलघर ।

घर - गेह' ।

(च)

चतुर - प्रवीण, निपुण, पटु, सयाना, कुशल, योग्य, दक्ष ।

चन्द्र - इन्दु'।

चाँदनी - चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना, जुन्हाई ।

चोर - दस्यु, रजनीचर, खनक, कुंभिल ।

चंदन - मलयज, गंधसार, गंधराज, श्रीखंड़

चन्द्रमा - देखें 'इन्दु' ।

चपला - विद्युत, बिजली, तड़ित, चंचला, दामिनी ।

शब्द - पर्याय

चरण - पग, पद, पैर, पाँव ।

चश्मा - उपनयन, उपनेत्र, सहनेत्र, ऐनक ।

(छ-ज)

छाती - सीना, उर, वक्षस्थल, वक्ष ।

छिनाल - कुलटा'।

जंग - लड़ाई, संग्राम, समर, युद्ध, रण ।

जंगल - वन, विपिन, अरण्य, अटवी ।

जग-संसार, जगत्, दुनिया, विश्व, भुवन ।

जल - पानी, नीर, उदक, सलिल, अम्बु, तोय, वारि ।

जलद - मेघ, बादल, वारिद, जलधर ।

(ट-ढ)

टेढ़ा - बक्र, बंक, कुटिल ।

ठग - धोखेबाज, वंचक, छली, छद्मी ।

डगर - राह, बाट, मार्ग, रास्ता, पंथ, ।

.

डर - भय, दहशत, भीति, आतंक, त्रास डाकू दस्यु, डकैत, राहजन, लुटेरा

ढंग - विधि, रीति, पद्धति, प्रणाली ।

(त-न)

तट - किनारा' ।

तड़ाग - तालाब, सरोवर, सर, ताल, जलाशय ।

तन - काया, देह, शरीर, जिस्म ।

तलवार - कृपाण, खड्ग, असि, खंजर, करवाल, सिरोही ।

तारा - नक्षत्र, सितारा, तारिका, उडु, तारक ।

तारीख - तिथि, दिनांक, मिती ।

तालाब - तड़ाग' ।

1. शेर के समान बलवान (आदमी)।

2. जोर-जोर से चिल्लाने वाले (तुम)।

3. सुन्दर और स्वच्छ लेख लिखने वाला (छात्र)।

5. क्रिया-विशेषण पदबन्ध- वह वाक्यांश या पद समूह जो क्रिया - विशेषण का कार्य करें उसे क्रिया-विशेषण पदबन्ध कहते हैं। जैसे-

1. घर से लौटकर जाऊंगा।

2. पहले से बहुत धीरे चलने लगा।

3. जमीन पर लोटते हुए बोला।

इन वाक्यों में सभी पदबन्ध क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

6. सम्बन्ध बोधक पदबन्ध - जो शब्द वाक्य में दो पदबन्धों के बीच सम्बन्ध स्थापित करावे, उन शब्दों को सम्बन्ध बोधक पदबन्ध कहेंगे। जैसे- बदले, वासो, पलटे, समान, योग्य, सरीखा, ऊपर, भीतर, पीछे से, बाहर की ओर आदि 'शब्द' वाक्य में सम्बन्ध बोधक पदबन्ध कहे जाते हैं। (1) राम की ओर (2) छत के ऊपर (3) कृष्ण के समान आदि।

7. समुच्चयबोध पदबन्ध - जो 'शब्द, वाक्यांश' एक पदबन्ध को दूसरे वाक्य / वाक्यांश से मिलाते हैं उन्हें समुच्चय बोधक पदबन्ध कहेंगे। जैसे-

1. राम और श्याम विद्यालय जाते हैं।

2. तुम आओगे अथवा श्याम आएगा।

3. यद्यपि यह काम कठिन है तथापि तुम इसे कर सकते हो।

8. विस्मयादि बोधक पदबन्ध - किसी वाक्य में हर्ष, शोक, विस्मय, लज्य, ग्लानि आदि मनोभावों को व्यक्त करने वाले शब्द 'विस्मयादिबोधक पदबन्ध' कहलाते हैं। जैसे -

1. अहा! आज तो मिठाईयाँ बन रही हैं।

2. हाँ! मैं भी तो सही कहता हूँ।

4. ऐ! तुम फर्स्ट आ गए।

अध्याय - 22

वाक्य-शुद्धि

अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना

शब्द शुद्धि के साथ वाक्य शुद्धि का भी भाषा में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य में अनावश्यक शब्द प्रयोग से, अनुपयुक्त शब्द के प्रयुक्त होने से, सही क्रम या अन्विति न होने से, लिंग, वचन, कारक का सही प्रयोग नहीं होने से, सही सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है। जो अर्थ के साथ भाषा सौन्दर्य को हानि पहुंचाता है।

1. अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि :

समान अर्थ वाले दो शब्दों या विपरीत अर्थ वाले शब्दों के एक साथ प्रयोग होने तथा एक ही शब्द की पुनरावृत्ति पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः किसी एक अनावश्यक शब्द को हटाकर वाक्य शुद्ध बनाया जा सकता है। इनमें दोनों शब्दों में से किसी एक को हटाना होता है। अतः दोनों रूपों में वाक्य सही हो सकता है। यहाँ एक रूप ही देंगे।

अशुद्ध वाक्य		शुद्ध वाक्य
1. मैं प्रातः काल के समय पढ़ता हूँ।	-	1. मैं प्रातः काल पढ़ता हूँ।
2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी।	-	2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड दिया।
3. इसके बाद फिर क्या हुआ ?	-	3. इसके बाद क्या हुआ ?
4. यह कैसे सम्भव हो सकता है ?	-	4. यह कैसे संभव है ?
5. मेरे पास केवल मात्र एक घड़ी है।	-	5. मेरे पास केवल एक घड़ी है।
6. तुम वापस लौट जाओ।	-	6. तुम वापस जाओ।

7. सारे देश भर में यह बात फैल गई।	-	7. सारे देश में यह बात फैल गई।
8. वह सचिवालय कार्यालय में लिपिक है।	-	8. वह सचिवालय में लिपिक है।
9. विन्ध्याचल पर्वत हिमालय से प्राचीन है।	-	9.विन्ध्याचल हिमालय से प्राचीन है।
10. नौजवान युवक युवतियों को आगे आना चाहिए।	-	10. नौजवानों को आगे आना चाहिए।
11. किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	-	11. किसी और से परामर्श लीजिए।
12. सप्रमाण सहित उत्तर दीजिए।	-	12. सप्रमाण उत्तर दीजिए।
13. गुलामी की दासता बुरी है।	-	13. गुलामी बुरी है।
14. प्रशान्त बहुत सज्जन पुरुष है।	-	14. प्रशान्त बहुत सज्जन है।
15. शायद आज वर्षा अवश्य आयेगी।	-	15. शायद आज वर्षा आयेगी।
16. शायद वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।	-	16. वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।
17. कृपया शीघ्र उत्तर देने की कृपा करें।	-	17. कृपया शीघ्र उत्तर दें।
18. वह गुनगुने गरम पानी से नहाता है।	-	18. वह गुनगुने पानी से नहाता है।
19. गरम आग लाओ।	-	19. आग लाओ।
20. तुम सबसे सुन्दरतम हो।	-	20. तुम सबसे सुन्दर हो।

2. <u>अनुपयुक्त शब्द के कारण :</u>

वाक्य में अनुपयुक्त शब्द प्रयुक्त हो जाने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है अतः अनुपयुक्त शब्द हटाकर उस स्थान पर उपयुक्त शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

अशुद्ध वाक्य		शुद्ध वाक्य
1. सीता राम की स्त्री थी।	-	1. सीता राम की पत्नी थी।
2. रातभर गधे भौंकते रहे।	-	2. रातभर कुत्ते भौंकते रहे।
3. कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है।	-	3. कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है।
4. बन्दूक एक शस्त्र है।	-	4. बन्दूक एक अस्त्र है।
5. आकाश में तारे चमक रहे हैं।	-	5. आकाश में तारे टिमटिमा रहे हैं।
6. आकाश में झण्डा लहरा रहा है।	-	6. आकाश में झण्डा फहरा रहा है।
7. उसकी भाषा देवनागरी है।	-	7. उसकी लिपि देवनागरी है।
8. वह दही जमा रही है।	-	8. वह दूध जमा रही है।
9. साहित्य व समाज का घोर संबंध है।	-	9. साहित्य व समाज का घनिष्ठ संबंध है।
10. उसके गले में बेड़ियाँ पड़ गई।	-	10. उसके पैरों में बेड़ियाँ पड़ गई।

11. हाथी पर काठी बाँध दो।	-	11. हाथी पर हौदा रख दो।
12. चिन्ता एक भयंकर व्याधि है।	-	12. चिन्ता एक भयंकर आधि है।
13. गगन बहुत ऊँचा है।	-	13. गगन बहुत विशाल है।
14. वह पाँव से जूता निकाल रहा है।	-	14. वह पाँव से जूता उतार रहा है।
15. कृपया मेरी सौभाग्यवती कन्या के विवाह में पधारें।	-	15. कृपया मेरी सौभाग्याकांक्षिणी कन्या के विवाह में पधारें।
16. उसे अपनी योग्यता पर अहंकार है।	-	16. उसे अपनी योग्यता पर गर्व है।
17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार भेंट किए।	-	17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार प्रदान किए।
18. कृष्ण ने कंस की हत्या की।	-	18. कृष्ण ने कंस का वध किया।
19. विख्यात आतंकवादी मारा गया।	-	19. कुख्यात आतंकवादी मारा गया।

3. लिंग सम्बन्धी :

वाक्य में प्रयुक्त शब्द के अनुसार उचित लिंग का प्रयोग न होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य		शुद्ध वाक्य
1. यह एकांकी बहुत अच्छी है।	-	1. यह एकांकी बहुत अच्छा है।
2. मेरे मित्र की पत्नी विद्वान है।	-	2. मेरे मित्र की पत्नी विदुषी है।
3. मीरां एक प्रसिद्ध कवि थी।	-	3. मीरां एक प्रसिद्ध कवयित्री है।
4. बेटी पराये घर का धन होता हैं।	-	4. बेटी पराये घर का धन होती है।
5. सत्य बोलना उसकी आदत था।	-	5. सत्य बोलना उसकी आदत थी।
6. बुआजी आप क्या कर रहे हैं?	-	6. बुआजी आप क्या कर रही हैं?
7. आत्मा अमर होता है।	-	7. आत्मा अमर होती हैं।
8. सेनापति को प्रणाम करनी पड़ती है।	-	8. सेनापति को प्रणाम करना पड़ता है।
9. ब्रह्मपुत्र असम में बहता है।	-	9. ब्रह्मपुत्र असम में बहती है।
10. वह स्त्री नहीं मूर्तिमन्त करुणा हैं।	-	10. वह स्त्री नहीं मूर्तिमयी करुणा हैं।
11. जया एक बुद्धिमान बालिका है।	-	11. जया एक बुद्धिमती बालिका है।
12. उसका ससुराल जयपुर में है।	-	12. उसकी ससुराल जयपुर में है।
13. तूफान मेल तेजी से आ रही है।	-	13. तूफानमेल तेजी से आ रहा है।

6. <u>कारक सम्बन्धी :-</u> वाक्य में प्रयुक्त कारक के अनुसार उचित विभक्ति न लगने से, अनावश्यक विभक्ति लगने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य		शुद्ध वाक्य
1. पाँच बजने को दस मिनट है।	-	1. पाँच बजने में दस मिनट हैं।
2. उसके सिर में घने बाल हैं।	-	2. उसके सिर पर घने बाल हैं।
3. देशभक्त बड़ी बड़ी यातनाओं को सहते हैं।	-	3. देशभक्त बड़ी-बड़ी यातनाएँ सहते हैं।
4. अपने बच्चे चरित्रवान् बनाओ।	-	4. अपने बच्चों को चरित्रवान् बनाओ।
5. दवा रोग को समूल से नष्ट करती है।	-	5. दवा रोग को समूल नष्ट करती है।
6. अपराधी को रस्सी बाँधकर ले गए।	-	6. अपराधी को रस्सी से बाँधकर ले गये।
7. मेरी राय से आप चले जाइए।	-	7. मेरी राय में आप चले जाइए।
8. उसने पत्नी का गला घोंट कर मार डाला।	-	8. उसने पत्नी का गला घोंट डाला।
9. बन्दर पेड़ में बैठे हैं।	-	9. बन्दर पेड़ पर बैठे हैं।
10. सीता घर नहीं है।	-	10. सीता घर पर नहीं है।
11. उसकी दृष्टि चित्र में गड़ी थी।	-	11. उसकी दृष्टि चित्र पर गड़ी थी।
12. उसने न्यायाधीश को निवेदन किया।	-	12. उसने न्यायाधीश से निवेदन किया।
13. आजकल राजनीति में अपराधी करण हो गया है।	-	13. आजकल राजनीति का अपराधी करण हो गया है।
14. वह बाजार में सब्जी लाने गया।	-	14. वह बाजार से सब्जी लाने गया।
15. राम आज स्कूल से अनुपस्थित हैं।	-	15. राम आज स्कूल में अनुपस्थित है।
16. आज संसद में बजट के ऊपर बहस होगी।	-	16. आज संसद में बजट पर बहस होगी।
17. गुरुजी के ऊपर श्रद्धा रखें।	-	17. गुरुजी के प्रति श्रद्धा रखें।
18. यह ग्रंथ विद्वतापूर्ण लिख गया है।	-	18. यह ग्रथ विद्वता से लिखा गया है।
19. जनता ने सैनिकों को उपहार भेजे।	-	19. जनता ने सैनिकों के लिए उपहार भेजे।
20. आम को खूब पका होना चाहिए।	-	20. आम खूब पका होना चाहिए।

7. <u>सर्वनाम सम्बन्धी :</u>

सर्वनाम के सही रूप में प्रयोग न होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य

1. मैंने आज अजमेर जाना है।	-	1. मुझे आज अजमेर जाना है।
2. तुम तुम्हारा काम करो।	-	2. तुम अपना काम करो।
3. मेरे को सौ रुपये की आवश्यकता है।	-	3. मुझे सौ रुपये की आवश्यकता है।
4. राम थककर उसके घर में सो गया।	-	4. राम थककर अपने घर में सो गया।
5. यह काम तेरे से नहीं होगा।	-	5. यह काम तुझसे नहीं होगा।
6. मैं उनको मिल कर प्रसन्न हुआ।	-	6. मैं उनसे मिलकर प्रसन्न हुआ।
7. सबों ने मान लिया कि पृथ्वी घूमती है।	-	7. सभी ने मान लिया कि पृथ्वी घूमती है।
8. अपन ठीक रास्ते पर हैं।	-	8. हम ठीक रास्ते पर हैं।
9. तेरे को कहाँ जाना है ?	-	9. तुम्हें कहाँ जाना है?
10. मेरे को पता नहीं वह कहाँ गया ?	-	10. मुझे पता नहीं वह कहाँ गया?
11. आपका उत्तर मुझ से अच्छा है।	-	11. आपका उत्तर मेरे उत्तर से अच्छा है।
12. हम हमारी कक्षा में गये।	-	12. हम अपनी कक्षा में गये।
13. हमारे वाला मकान खाली है।	-	13. हमारा मकान खाली है।
14. वह आपको और मुझ को देख कर भाग गया।	-	14. वह आप और मुझे देखकर भाग गया।
15. तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता।	-	15. तुमसे कोई काम नहीं हो सकता।
16. हमको सबको देश पर मर मिटना है।	-	16. हम सब को देश पर मर मिटना है।
17. पिताजी ने मुझको कहा।	-	17. पिताजी ने मुझे कहा।
18. मेरे को यह रुचिकर नहीं।	-	18. मुझे यह रुचिकर नहीं।
19. आप और मैंने मिलकर यह काम किया।	-	19. आपने और मैंने मिलकर यह काम किया।
20. मेरे को दो निबन्ध लिखने हैं।	-	20. मुझे दो निबन्ध लिखने हैं।

8. <u>क्रिया सम्बन्धी</u> :

सही क्रिया रूप प्रयुक्त न होने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य		शुद्ध वाक्य
1. मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा देखीं।	-	1. मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की।
2. यह आप पर निर्भर करता है।	-	2. यह आप पर निर्भर है।
3.सर्वत्र आधुनिकीकरण करना ठीक नहीं।	-	3.सर्वत्र आधुनिकीकरण ठीक नहीं।

4. राम ने गुरुजी से प्रश्न पूछा।	- 4. राम ने गुरुजी से प्रश्न किया।
5. प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भाभी' पाठ से ली हैं।	- 5. प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भाभी' पाठ से ली गई हैं।
6. आप आम खाके देखों।	- 6. आप आम खाकर देखें।
7. अब तुम जाइये।	- 7. अब तुम जाओ। अब आप जाइये।
8. मेरे नौकर ने नौकरी त्याग दी।	- 8. मेरे नौकर ने नौकरी छोड़ दी।
9. वह क्या करना माँगता है ?	- 9. वह क्या करना चाहता है ?
10. उसने मुझे गाली निकाली।	- 10. उसने मुझे गाली दी।
11. गत रविवार वह जोधपुर जायेगा।	- 11. गत रविवार वह जोधपुर गया।
12. हम रात में भोजन खाते हैं।	- 12. हम रात में भोजन करते हैं।
13. राम को यहाँ आने के लिए बोल दो।	- 13. राम को यहाँ आने के लिए कह दो।
14. तुम्हारे गये पर जया आई थी।	- 14. तुम्हारे जाते ही जया आई थी।
15. नदी पार हो गई।	- 15. नदी पार कर ली गई।
16. बालक मिठाई और दूध पी कर सो गया।	- 16. बालक मिठाई खाकर और दूध पी कर सो गया।
17. गुरु जी ने शिष्य को आशीर्वाद प्रदान किया।	- 17. गुरु जी ने शिष्य को आशीर्वाद दिया।
18. भीतर प्रवेश करना निषेध है।	- 18. प्रवेश निषेध है।
19. गाँधी जी को भुलाया नहीं जा सकता।	- 19. गाँधीजी को भूला नहीं जा सकता।
20. उसने क्या संकल्प लिया ?	- 20. उसने क्या संकल्प किया ?

१. <u>मुहावरे के कारण</u> :

मुहावरे का सही प्रयोग न होने या उसमें पाठान्तर होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. प्रधानमंत्री ने देश का धुआँधार दौरा किया।	- 1. प्रधानमंत्री ने देश का तूफानी दौरा किया।
2. पानी पीकर नाम पूछना निरर्थक हैं	- 2. पानी पीकर जात पूछना निरर्थक है।
3. प्रेम करना तलवार की नोंक पर चलना है।	- 3. प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है।
4. दुश्मनों ने हथियार रख दिये।	- 4. दुश्मनों ने हथियार डाल दिये।
5. आजकल भ्रष्टाचार के बाजार गर्म हैं।	- 5. आजकल भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है।
6. चोरी करते पकड़े जाने पर,	- 6. चोरी करते पकड़े जाने पर, उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

विश्व भूगोल

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विश्व का भूगोल

अध्याय – I

भौगोलिक संरचना एवं प्रमुख स्थलाकृतियाँ

- **महाद्वीप एवं महत्वपूर्ण स्थान**

➢ क्षेत्रफल की दृष्टि से ,महाद्वीपो का अवरोही क्रम है – एशिया >अफ्रीका > ,उतरी अमेरिका >,दक्षिण अमेरिका> ,अंटार्कटिका>,यूरोप > ऑस्ट्रेलिया ।

विश्व के प्रमुख द्वीप

नाम	-	स्थिति
ग्रीनलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक (डेनिस)
न्यू गिनी	-	दक्षिण-पश्चिम प्रशांत महासागर (आडरियन, जावा इंडोनेशिया का पश्चिमी भाग: पापुआ न्यू गिनी का पूर्वी भाग)
बोर्निओ	-	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर (इंडोनेशिया का दक्षिणी भाग, ब्रिटिश प्रोटेक्टरेट और मलेशिया का उत्तरी भाग)
मेडागास्कर	-	हिंद महासागर (मलागासी गणतंत्र)
बैफिन	-	उत्तरी अटलांटिक (कनाडा)
सुमात्रा	-	उत्तरी हिंद महासागर (इंडोनेशिया)
होंसु	-	जापान सागर प्रशांत महासागर (जापान)
ग्रेट ब्रिटेन	-	उत्तरी -पश्चिमी यूरोप (इंग्लैण्ड, स्कॉटलैंड और वेल्स)
विक्टोरिया	-	आर्कटिक महासागर(कनाडा)
ईल्समिटे	-	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
सेलेबीज	-	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर(इंडोनेशिया)
दक्षिणी द्वीप	-	दक्षिण प्रशांत महासागर (न्यूजीलैंड)
जावा	-	हिंद महासागर (इंडोनेशिया)
उत्तरी द्वीप	-	दक्षिण प्रशांत महासागर (न्यूजीलैंड)
क्यूबा	-	कैरीबियन सागर (गणतंत्र)
न्यूफाउंडलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक (कनाडा)
लूजोन	-	पश्चिम मध्य प्रशांत महासागर (फिलीपींस)
आइसलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक महासागर (गणतंत्र)
मिंडनाओ	-	पश्चिमी मध्य प्रशांत महासागर (फिलीपींस)
आयरलैंड	-	उत्तरी अटलांटिक महासागर (दक्षिणी भाग गणतंत्र, उत्तरी भाग ग्रेट ब्रिटेन के अधीन)
क्काइडो	-	जापान सागर - प्रशांत महासागर (जापान)
स्पानियोला	-	कैरीबियन सागर (डोमोनिकन गणतंत्र पूर्वी भाग हैली पश्चिमी भाग)
तस्मानिया	-	ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण में (ऑस्ट्रेलिया)
लंका	-	हिंद महासागर (गणतंत्र)
सखालिन	-	जापान के उत्तर में (रूस) (कराफुटो)
नक्स	-	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
वोन	-	आर्कटिक महासागर (कनाडा)
यरा डेल	-	दक्षिण अमेरिका का दक्षिणी छोर फर्यूगो (पूर्वी भाग अर्जेंटीना, पश्चिमी भाग चिली)
सू	-	जापान - सागर- प्रशांत महासागर जापान
लविली	-	आर्कटिक महासागर(कनाडा)

ऐक्जेल हैबर्ग - आर्कटिक महासागर (कनाडा)

साउथेप्टन - हडसन की खाड़ी (कनाडा)

➢ पर्वत (Mountains)

- स्थल का वह भू -भाग जो अपने आस-पास के क्षेत्र से कम से कम 600 मीटर से अधिक ऊंचा हो और जिसका शीर्ष चोटीनुमा तथा पृष्ठ तीव्र ढाल युक्त हो, पर्वत (Mountain) कहलाता है।
- ऐसा उच्च प्रदेश जिसमें विभिन्न काल विभिन्न रीतियों से बनी पर्वतमालाएँ विद्यमान हो, पर्वत-समूह (Cordillera) कहलाता है, जैसे -ब्रिटिश कोलम्बिया का कॉर्डिलेरा।
- जब एक ही प्रकार और एक ही आयु के कई पर्वत लंबी एवं शंकरी पट्टी में फैले होते हैं, तो उसे पर्वत-श्रेणी (Mountain Range) कहा जाता है, जैसे - हिमालय पर्वत- श्रेणी।
- एक ही काल और एक ही प्रकार से बनी अनेक पर्वत- श्रेणियों के समूह को पर्वत - तंत्र (Mountain System) कहते हैं, जैसे - अप्लेशियन पर्वत।

- **उत्पत्ति के आधार पर पर्वत पांच प्रकार के होते हैं,**

1. **वलित पर्वत** (Folded Mountains) पृथ्वी की आंतरिक शक्तियों द्वारा धरातलीय चट्टानों में मोड़ या वलन पड़ने के परिणाम स्वरूप बने हुए पर्वतों को मोड़कर अथवा वलित पर्वत कहा जाता है, जैसे - हिमालय, रॉकीज, आलप्स, यूराल, एण्डीज आदि।

2. **ब्लॉक अथवा भ्रंशोत्थ पर्वत** (Block Mountains)
जब चट्टानों में स्थित भ्रंश के कारण मध्य भाग नीचे की ओर धँस जाता है, तथा अगल-बगल के भाग ऊंचे प्रतीत होते हैं तो वह ब्लॉक पर्वत कहलाते हैं, और बीच के धँसे भाग को रिफ्ट घाटी कहते हैं, जैसे सियरा, नेवादा पर्वत, अल्बर्ट, वासाचरेंज, बार्नर, ब्लैक फॉरेस्ट, वासगेज, साल्ट रेंज आदि।

3. **संग्रहित पर्वत** (Accumulated Mountains) किसी भी साधन द्वारा धरातल पर मिट्टी, कंकड़, पत्थर, बालू आदि का धीरे-धीरे जमाव होने से कालांतर में निर्मित बड़ी पर्वताकार स्थलाकृति को संग्रहित पर्वत कहा जाता है। ऐसे पर्वतों का सर्वप्रमुख रूप से तो ज्वालामुखी उद्गार के समय बनने वाले लावा तथा अन्य जमावों वाले पर्वत ही हैं इन पर्वतों का निर्माण ज्वालामुखीय उद्गार से उत्पन्न पदार्थों से होता है । अतः इन्हें ज्वालामुखी पर्वत भी कहते हैं ;- जैसे शस्ता, रेनियर, हुड, लासेन, पीक, फ्यूजीयामा विसुवियस, एटना, केनिया, पोपोकेटीपल माउंट एकांकागुआ आदि।

4. गुंबदाकार पर्वत (Dome-shaped Mountains) जब पृथ्वी के भीतर का लावा बाहर निकलने की चेष्टा करता है, तो वह धरातल की परतों में फोड़े की तरह उभार पैदा कर देता है, जिससे गुंबदाकार पर्वत बन जाते हैं ;- जैसे हेनरी पर्वत, ब्लैक हिल्स, बिगहान्स आदि।

5. **अवशिष्ट पर्वत** (Erosion or Relict Mountains) यह पर्वत चट्टानों के अपरदन के फलस्वरूप निर्मित होते हैं ; जैसे - अरावली, सतपुड़ा, महादेव, अप्लेशियन ऑजार्क, गैसिफ, कैटस्किल, पारसनाथ, विंध्यांचल, पश्चिमी घाट।

विश्व के प्रमुख पर्वत – शिखर			
क्र.स.	**नाम**	**देश**	**ऊंचाई (मीटर में)**
1.	एवरेस्ट	नेपाल	8,848
2.	के2(गॉडविन ऑस्टिन)	भारत	8,611
3.	कंचनजंगा	नेपाल - भारत	8,598
4.	लहात्से	नेपाल	8,501
5.	मकालू	नेपाल-चीन	8,475

6.	धौलागिरी	नेपाल	8,172
7.	नंगा पर्वत	भारत	8,126
8.	अन्नपूर्णा	नेपाल	8,078
9.	ग्रेशरब्रम	भारत(पाक अधिकृत)	8,068
10	गोसांई थान	चीन	8,018
11.	नंदादेवी	भारत	7,817
12.	राकापोशी	भारत(पाक अधिकृत)	7,788
13.	कामेट	भारत-चीन	7,756
14.	नाम्चावर्वा	चीन	7,756
15.	गुर्लमान्धाता	चीन	7,728
16.	तिरिचमीर	पाकिस्तान	7,728

क्र. सं	पर्वत	स्थिति
	A. वलित पर्वत Folded Mountains	
1.	हिमालय	एशिया
2.	आल्पस	यूरोप
3.	रॉकी	उत्तरी अमेरिका
4.	एण्डीज	दक्षिणी अमेरिका
5.	यूराल	एशिया-यूरोप
6.	एप्लेशियन	उत्तरी अमेरिका
7.	त्यानशान	एशिया (रूस)
8.	नॉन-शान	एशिया (चीन)
9.	सयान	रूस (एशिया)
10.	स्टेनोबाई	रूस (एशिया)
11.	अरावली	भारत (एशिया)
12.	विंध्याचल	भारत (एशिया)
	B. ब्लॉक पर्वत Block Mountains	
1.	सियरा नेवादा	उत्तरी अमेरिका
2.	एल्बर्ट	उत्तरी अमेरिका
3.	वासाच रेंज	उत्तरी अमेरिका
4.	बार्नर	उत्तरी अमेरिका
5.	ब्लैक फारेस्ट	जर्मनी (यूरोप)
6.	वासगेज	फ्रांस (यूरोप)
7.	साल्ट रेंज	पाकिस्तान (एशिया)
	C. गुम्बदाकार पर्वत Dome Shaped Mountains	
1.	हेनरी पर्वत	संयुक्त राज्य अमेरिका
	D. संगृहीत पर्वत Accumulated Mountains	
1.	शस्ता	संयुक्त राज्य अमेरिका
2.	रेनियर	संयुक्त राज्य अमेरिका
3.	हुड	संयुक्त राज्य अमेरिका
4.	लासेन पीक	संयुक्त राज्य अमेरिका
5.	फ्यूजीयामा	जापान
6.	विसूवियस	इटली
7.	एटना	इटली
8.	मैथान	फिलीपींस
9.	पोपो केटीपीटल	मैक्सिको
10.	माउण्ट एकांकागुआ	चिली

E. अवशिष्ट पर्वत Erosion on Relict Mountains

1. महादेव भारत (एशिया)
2. अरावली भारत (एशिया)
3. सतपुड़ा भारत (एशिया)

विश्व की प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ

क्र.सं.	नाम	स्थिति	सर्वोच्च बिन्दु	ऊँचाई (मी)	लम्बाई (किमी)
1.	कार्डिलेरा डिलौंस एण्डीज	पश्चिमी - दक्षिणी अमेरिका	एकांकागुआ	6,960	7,200
2.	रॉकी पर्वत श्रेणी	पश्चिमी - उत्तरी अमेरिका	माउण्ट एल्बर्ट	4,400	4,800
3.	हिमालय कराकोरम हिन्दुकुश	दक्षिणी - मध्य एशिया	माउण्ट एवरेस्ट	8,850	3,800
4.	ग्रेट डिवाइडिंग रैंज	पूर्वी ऑस्ट्रेलिया	कोस्यूको	2,228	3,600
5.	ट्रांस अण्टार्कटिका पर्वत	अण्टार्कटिका	माउण्ट किर्कपैट्रिक	4,529	3,500
6.	ब्राजीलियन एटलांटिक तटीय श्रेणी	पूर्वी ब्राजील	पिको डिवैण्डेरियो	2,890	3,000
7.	पश्चिमी सुमात्रा-जावा श्रेणी	प० सुमात्रा तथा जावा	केरिण्टजी	3,805	2,900
8.	एल्यूशियन रैंज	अलास्का तथा उ० प० प्रशांत महासागर	शिशैल्डिन	2,861	2,650
9.	तियेन शान	दक्षिणी मध्य एशिया	पीके पोबेडा	7,439	2,250

			इसकी औसत ऊँचाई 3,110 मीटर है।
10.	मेसेटा का पठार	स्पेन का आइबेरियन प्रायद्वीप पर मसेटा का पठार स्थित है।	610 मीटर औसत ऊँचाई
11.	तिब्बत का पठार	मध्य एशिया में (हिमालय के उत्तर और क्युनलुन पर्वत के दक्षिण में स्थित है।	4000 से 5000 मीटर तक की ऊँचाई
12.	मंगोलिया का पठार	उत्तरी मध्य चीन तथा मंगोलिया गणराज्य में स्थित है।	
13.	यूनान का पठार (इंडोचाइना का पठार)	म्यांमार का शान प्रदेश चीन, एवं वियतनाम	
14.	ईरान का पठार (एशिया माइनर का पठार)	ईरान	900 से 1500 मीटर औसत ऊँचाई
15.	अरब का पठार	दक्षिण-पश्चिम एशिया में स्थित है इसके पूर्व में फारस की खाड़ी, पश्चिम में लाल सागर, उत्तर-पश्चिम में भूमध्य सागर, और दक्षिण में अरब सागर स्थित है।	
16.	टर्की का पठार (अनातोलिया का पठार)	टर्की	
17.	दक्षिण का पठार (प्रायद्वीप भारतीय का पठार)	दक्षिण भारत	1200 मी से अधिक ऊँचाई (केंद्रीय भारत को छोड़कर)
18.	एबीसीनिया का पूर्वी पठार (इथियोपिया का पठार)	पूर्वी अफ्रीका, इथियोपिया एवं सोमालिया में विस्तृत)	-
19.	दक्षिण अफ्रीका का पठार	दक्षिण अफ्रीका का केप प्रांत, नेटाल तथा वसूतोलैंड	
20.	मालगासी का पठार (मेडागास्कर का पठार)	संपूर्ण मेडागास्कर द्वीप का मध्यवर्ती भाग	1000 से 1500मी. औसत ऊँचाई
21.	ऑस्ट्रेलिया का पठार	ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप का लगभग आधा पश्चिम भाग	1200मी. तक ऊँचा

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **मैदान (Plains)**

❖ भूपटल पर निचले और समतल क्षेत्र को मैदान (Plain) कहा जाता है।

❖ ऊँचाई की दृष्टि से मैदान समुद्रतल से 150 मीटर तक ऊँचे भू-भाग हैं।

❖ स्थिति के आधार पर मैदान दो प्रकार के होते हैं

I. **तटीय मैदान** (Coastal Plain) सागर तटों के निकट के मैदान तटीय मैदान कहलाते हैं। फ्लोरिडा के मैदान और भारत के पूर्वी तटीय मैदान इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

I. **आंतरिक मैदान** (Interior Plain) महाद्वीपों के आंतरिक भाग में पाए जाने वाले मैदान को

आंतरिक मैदान कहा जाता है। यूरोप का मैदान इसका प्रमुख उदाहरण है।

❖ प्रो. फिंच एवं ट्रिवार्थ ने मैदानों को रचना के आधार पर चार वर्गों में बाँटा है।

1. **समतल मैदान** यह मैदान सपाट और विस्तृत होते हैं। इनकी ऊँचाई सामान्यतः 15 मी. होती है, इन्हें समतल मैदान कहते हैं।
2. **विच्छेदित मैदान** 50 से 100 मीटर की ऊंचाई के मैदान अनाच्छादन द्वारा कट फटकर उबड़- खाबड़ से हो जाते हैं, जिन्हें विच्छेदित मैदान कहते हैं।
3. **असमतल मैदान** 1.5 से 50 मीटर ऊंचाई के मैदान जिनके धरातल सपाट तथा विस्तृत होते हैं, इन्हें असमतल मैदान या तरंगित मैदान कहते हैं।
4. **लहरदार मैदान** 50 से 100 मीटर की ऊंचाई के मैदान, जिनकी सतह ना होकर विषम होती है तथा उनके मध्य में छोटे-बड़े टीले भी विस्तृत होते हैं, इन्हें लहरदार मैदान का बेलानी मैदान कहते हैं।

❖ निक्षेपण के आधार पर मैदानों के निम्नलिखित प्रकार हैं -

1. **नदी द्वारा निक्षेपण से बने मैदान** नदियाँ अपने अपरदन चक्र को अंतिम अवस्था में स्थलखंड को काटकर अपने आधार तल को प्राप्त कर लेती हैं, इस तरह से निर्मित मैदान को समतल (समप्राय) मैदान कहा जाता है। इन्हें निम्नलिखित तीन भागों में बाँट सकते हैं (i) गिरिपाद जलोढ़ मैदान, (ii) बाढ़ मैदान तथा (iii) डेल्टा का मैदान।
2. **पवन द्वारा निक्षेपण से बने मैदान** मरुस्थलीय भागों में तेज गति की हवाएँ कणों व रेत को उड़ाकर अन्यत्र जमा करती हैं। कालांतर में चट्टानी भाग घिसकर मैदान के रूप में बदल जाते हैं। इस प्रकार के बने मैदान मरुस्थलीय मैदान कहलाते हैं अफ्रीका के सहारा व भारत के थार मरुस्थलों में ऐसे मैदानों के उदाहरण मिलते हैं। लोयस के मैदान मरुस्थलों से दूर बनते हैं। तीव्र गति की पवनें मिट्टी के कणों को उड़ाकर अधिक दूर तक ले जाती हैं, जहाँ पर उनकी गति मंद पड़ जाती है, वहीं पर इन पदार्थों का निक्षेपण होने लगता है, जिसे लोयस का मैदान कहते हैं।
3. **हिमानी द्वारा निक्षेपित मैदान** हिमनदी या हिमानी द्वारा मलबे के निक्षेपण से बने मैदानों को हिमानीकृत मैदान कहते हैं। इस प्रकार के मैदान कनाडा, फिनलैंड और स्वीडन में हैं।
4. **कार्स्ट मैदान** यह चूने के पत्थर की चट्टानों के घुलने से निर्मित होते हैं। भारत में चित्रकूट और रामगढ़ उनके प्रमुख उदाहरण हैं।

- **मैदान के प्रकार**

- **मैदान के प्रकार**

क्र. सं.	मैदान के प्रकार	निर्माण स्थल	उदाहरण
1.	कार्स्ट मैदान	चूने के प्रदेशों में	सर्बिया एवं मांटेनेग्रो
2.	हिम अपरदित मैदान	हिमानी प्रदेशों में	कनाडा, फिनलैंड, स्वीडन
3.	जलोढ़ मैदान	नदियों के मैदानी भाग में	सिंधु-गंगा का मैदान, मिसिसिपी का मैदान, नील का मैदान, डेन्यूब का मैदान, ह्वांगहो या यांगटीसी का मैदान
4.	बद्रड मृत्तिका मैदान	हिमानी के निक्षेपण स्थल	न्यू इंग्लैंड प्रदेश
5.	लोएस का मैद	वायु के निक्षेपण स्थल	उत्तरी चीन

6.	तटीय मैदान	महाद्वीपीय मग्न तट	भारत का कोरोमंडल तट, सं. रा. अमेरिका में फ्लोरिडा का मैदान
7.	समतल मैदान सम्प्राय मैदान	अपरदन द्वारा ऊँचे भू-भागों के घिसनें से	मध्य रूस का मैदान, पेरिस बेसिन
8.	झीलों के मैदान	झील के पेटे के उत्थान एवं झील के जल के सूखने से	नीदरलैंड का मैदान

विश्व के प्रमुख मैदान

क्र. सं.	नाम	स्थिति
1.	मध्यवर्ती बड़ा मैदान	कनाडा तथा संयुक्त राज्य अमेरिका
2.	अमेजन का मैदान	दक्षिणी अमेरिका
3.	पेंटागोनिया का मैदान	दक्षिणी अमेरिका
4.	पम्पास का मैदान	दक्षिणी अमेरिका
5.	फ्रांस का मैदान	फ्रांस (यूरोप)
6.	यूरोप का बड़ा मैदान	यूरोप
7.	द. साइबेरिया का मैदान	यूरोप एवं एशिया
8.	सहारा का मैदान	अफ्रीका
9.	नील नदी का मैदान	मिस्र (अफ्रीका)
10.	अफ्रीका का पूर्वी तटीय मैदान	अफ्रीका
11.	अफ्रीका का पश्चिमी तटीय मैदान	अफ्रीका
12.	मलागासी का मैदान	मलागासी
13.	गंगा-यमुना का मैदान	भारत
14.	सिंधु का मैदान	भारत-पाकिस्तान
15.	ब्रह्मपुत्र का मैदान	भारत-बांग्लादेश
16.	अरब का मैदान	सऊदी अरब
17.	चीन का मैदान	चीन
18.	ऑस्ट्रेलिया का पूर्वी मैदान	ऑस्ट्रेलिया

अध्याय – 2

प्रमुख नदियाँ एवं झीलें

नदियाँ -

- जिस स्थान पर नदी जन्म लेती है, उसे नदी का उद्गम स्थान कहा जाता है।
- जिस स्थान पर नदी सागर या किसी बड़ी झील में जाकर गिरती है, उसे नदी का मुख या मुहाना कहते हैं।
- जिस मार्ग से नदी की धारा गुजरती है, उसे नदी घाटी कहा जाता है।
- नदी घाटी के विकास में जब सहायक नदियाँ मुख्य नदी से आकर मिलती है तो अपवाह बेसिन (Drainage System) का निर्माण होता है।
- दो अपवाह बेसिनों के बीच के उच्च भाग को जल विभाजक (Watershed or Water Divider) कहते हैं।
- भारत की पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणी जल-विभाजक का काम करती है ।
  - क्योंकि इसके पूर्व में बहने वाली नदियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं, जबकि पश्चिम में बहने वाली नदियाँ अरब सागर में गिरती हैं।
- वह क्षेत्र, जिसमें से होकर नदी बहती है और जल ग्रहण करती है, नदी का अपवाह क्षेत्र (Catchment Area) कहलाता है।
- प्रारंभिक भौतिक ढ़ाल पर बहने वाली नदी को अनुवर्ती नदी (Conseqment Stream) कहते हैं।
- अनुवर्ती नदी में मिलने वाली सहायक नदी को परवर्ती नदी कहते हैं।
- ऑक्सीजन द्वारा शैलों पर होने वाले प्रभाव को ऑक्सीकरण कहते हैं।
- जब जल में घुला हुआ कार्बन चट्टानों पर प्रभाव डालता है तो उसे कार्बोनीकरण कहा जाता है।
- जब हाइड्रोजन जल में मिलकर चट्टानों का अपक्षय करती है तो इसे जलयोजन (Hydration) कहते हैं।
- भारत में सिन्धु नदी द्वारा सिन्धु गार्ज, सतलज नदी द्वारा शिपकी-ला गार्ज तथा ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा कोरबा गार्ज का निर्माण हुआ है।
- सं. रा. अमेरिका में कोलोरेडो नदी के शुष्क पठार पर कोलोरेडो नदी द्वारा निर्मित कोलोरेडो कैनियन विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध कैनियन है।
- भेड़ा गार्ज (भेड़ा घाट, जबलपुर) भारत का सबसे बड़ा संगमरमर का गार्ज है।
- भारत में कर्नाटक राज्य में शरावती नदी पर स्थित जोग या गरसोप्पा जल प्रपात 260 मीटर की ऊँचाई से गिरता है।
- हुंडरू जलप्रपात स्वर्णरेखा नदी पर स्थित है।
- कपिलधारा जलप्रपात मध्य प्रदेश के अनुपुर जिले में नर्मदा नदी पर स्थित है। शिवसमुद्रम जलप्रपात कर्नाटक के माण्ड्या जिले में कावेरी नदी पर अवस्थित है।

विश्व की प्रमुख झीलें नदियाँ

नाम	उद्गम स्थान	गिरने का स्थान	लम्बाई (किमी.
1. नील	विक्टोरिया झील (बुरुंडी)	भूमध्य सागर	6,690
2. अमेजन	लैंगो विलफेरो	अटलांटिक महासागर	6,296
3. मिसीसिपी-मिसौरी	रेड रॉक स्रोत (अमेरिका)	मैक्सिको की खाड़ी	6,240
4. यांग्सी	तिब्बत का पठार	चीन सागर	5,797
5. ओबे	अल्टाई पर्वत	ओब की खाड़ी	5,567
6. ह्वांगहो	क्युनलुन पर्वत	चिहिल की खाड़ी	4,667
7. येनिसी	सान्यु-ओला पर्वत	आर्कटिक महासागर	4,506

8. काँगो	लूआलया व लआपूला के संगम	अटलांटिक महासागर	4,371
9. आमूर	शिल्का रूस आरगून के संगम	टार्टर स्ट्रेट	4,352
10. लीना	बेकाल पर्वत (रूस)	आर्कटिक महासागर	4,268
11. मेकेंजी	फिनले नदी के मुहाने से	ब्यूफोर्ट सागर	4,241
12. नाइजर	गिनी (अफ्रीका)	गिनी की खाड़ी	4,184
13. मीकांग	तिब्बत के पठार	दक्षिणी चीन सागर	4,023
14. वोल्गा	ब्लडाई पठार (रूस)	कैस्पियन सागर	3,687
15. सैन फ्रांसिस्को	द. मिनास गिटेस (ब्राजील)	अन्ध महासागर	3,198
16. सेंट लारेंस	आण्टोरियो झील	सेंट लारेंस की खाड़ी	3,058
17. ब्रह्मपुत्र	मानसरोवर झील	बंगाल की खाड़ी	2,900
18. सिन्धु	मानसरोवर झील के पास	अरब सागर	2,880
19. डेन्यूब	ब्लैक फॉरेस्ट (जर्मनी)	काला सागर	2,842
20. फरात	कारासुन व मूरत नेहरी संगम	शत-अल-अरब	2,799
21. डार्लिंग	ऑस्ट्रेलिया	मर्रे नदी	2,789
22. मरे	आस्ट्रेलियन आल्प्स से	हिन्द महासागर	2,589
23. नेलसन	बो नदी का ऊपरी भाग	हडसन की खाड़ी	2,575
24. पराग्वे	मांटोग्रोसो (ब्राजील)	पेराना नदी	2,549
25. यूराल	द. यूराल पर्वत (रूस)	कैस्पियन सागर	2,533
26. गंगा	गोमुख हिमानी से	बंगाल की खाड़ी	2,525
27. आमू-दरिया	निकोलस श्रेणी (पामीर)	अरल सागर	2,414
28. साल्विन	तिब्बत क्युलुन पर्वत के दक्षिण	मर्तावान की खाड़ी	2,414
29. अरकन्सास	मध्य कोलोरेडो	मिसीसिपी नदी	2,348
30. कोलोरेडो	ग्रैंड कण्ट्री	कैलीफोर्निया की खाड़ी	2,333
31. नीपर	ब्लडाई पर्वत (रूस)	काला सागर	2,284
32. ओहियो	पोटरकन्ट्री (पेन्सिलवानिया)	मिसीसिपी नदी	2,102
33. इरावदी	माली और नामी नदी का संगम	बंगाल की खाड़ी	2,092
34. ओरेंज	लिसोथो	अटलांटिक महासागर	2,092
35. ओरीनीको	सिएरापरिमा पर्वत	अटलांटिक महासागर	2,062
36. कोलम्बिया	कोलम्बिया झील (कनाडा)	प्रशान्त महासागर	1,983
37. डोन	टूला (रूस)	अजोब सागर	1,968

38. टिगरिस	टॉरस पर्वत (टर्की)	शत-अल-अरब	1,899

➢ **नदियों के किनारे बसे प्रमुख नगर**

क्र.सं.	**नदी**
1. बगदाद (इराक)	टाइग्रिस
2. बर्लिन (जर्मनी)	स्त्री
3. पर्थ (ऑस्ट्रेलिया)	स्वान
4. वारसा (पोलैण्ड)	विस्चुला
5. अस्वान (मिस्र)	नील
6. सेंट लुईस (अमेरिका)	मिसीसिपी
7. रोम (इटली)	टाइबर
8. लन्दन (इंग्लैंड)	टेम्स
9. पेरिस (फ्रांस)	सीन
10. मास्को (रूस)	मोस्कावा
11. प्राग (चेक गणराज्य)	विंतावा
12. बोन (जर्मनी)	राइन
13. खारतूम (सूडान)	नील
14. काहिरा (मिस्र)	नील
15. ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना)	लाप्लाटा
16, अंकारा (टर्की)	किजिल
17. डुंडी (स्कॉटलैण्ड)	टे
18. लीवरपुल (इंग्लैंड)	मर्सी
19. कोलोन (जर्मनी)	राइन
20. माण्ट्रियल (कनाडा)	सेंट लॉरेंस
21. सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)	डार्लिंग
22. बेलग्रेड (सर्बिया)	डेन्यूब
23. बुडापेस्ट (हंगरी)	डेन्यूब
24. वाशिंगटन (सं. रा. अ.)	पोटोमेक
25. वियाना (आस्ट्रिया)	डेन्यूब
26. टोकियो (जापान)	अराकावा
27. शंघाई (चीन)	यांगटिसीक्यांग
28. यांगून (म्यांमार)	इरावदी
29. ओटावा (कनाडा)	सेंट लॉरेंस
30. न्यूयॉर्क (सं. रा. अ.)	हडसन
31. मैड्रिड (स्पेन)	मैंजेनसेस
32. लिस्बन (पुर्तगाल)	टंगस
33. डबलिन (आयरलैण्ड)	लीफे
34. चटगाँव (बांग्लादेश)	कर्णफुली
35, हैम्बर्ग (जर्मनी)	एल्ब
36. शिकागो (अमेरिका)	शिकागो
37. ब्रिस्टल (इंग्लैंड)	एवन्
38, बसरा (इराक)	शत अल अरब
39. क्यूबेक (कनाडा)	सेंट लॉरेंस
40. लेलिनग्राड (रूस)	नेवा

विश्व के प्रमुख जल - प्रपात

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

- RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /
- दोस्तों, राजस्थान SI 2021 (15 सितम्बर) की परीक्षा में हमारे नोट्स में से पेपर - I & 2 में 200 प्रश्नों में से 126 प्रश्न आये थे, cutoff से ज्यादा /

अन्य रिजल्ट -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/nr1tcz

Online order - https://cutt.ly/o0zXjbh